श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विभाग, रोहतास महिला कालेज सासाराम।
वर्ग — बी० ए० पार्ट – III 'प्रतिष्ठा'
पत्र संख्या – VI; यूनिट न० – 02

प्रस्तुत राजनीतिक चिंतक – डॉ० कृष्ण किशोर झा

दिनांक – 23-05-2020

प्रश्न :- कौटिल्य के सप्तांग सिद्धान्त का वर्णन करें।

उत्तर :- कौटिल्य के अनुसार राज्य के सात आवश्यक तत्व होते हैं। उन्हें वह राज्य की प्रकृति भी कहता है और अंग भी। राज्य के सात अंगों के कारण ही राज्य की प्रकृति के संबंध में कौटिल्य का सिद्धान्त सप्तांग सिद्धान्त कहलाता है।

कौटिल्य ~~ने~~ ~~अनुसार~~ अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र के छठे अधिकरण के प्रथम अध्याय में राज्य के सातों अंगों का उल्लेख किया है। वे हैं — (1) स्वामी (2) अमात्य (3) जनपद (4) दुर्ग (5) कोष (6) दंड (7) मित्र।

कौटिल्य ने राज्य के इन सातों अंगों का विशद विवेचना भी किया है।

(1) स्वामी :- कौटिल्य के अनुसार स्वामी या राजा राज्य का केन्द्र और प्रधान होता है। राज्य की सफलता राजा की चारित्रिक गुण एवं नीति पर निर्भर करता है। कौटिल्य के राज्य में राजा ही शासन की धुरी है। वही शासन संचालन में सक्रिय रूप से भाग लेकर शासन को गति प्रदान करता है। अतएव कौटिल्य ने राजा के आवश्यक गुणों, योग्यताओं, नीतियों आदि पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। उसके अनुसार राजा को कुलीन, धर्मनिष्ठ, सत्यवादी, विवेकी, दूरदर्शी आदि होनी चाहिए। उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। राजा को पूर्णरूप से शिक्षित भी होना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार घुन लगी हुई लकड़ी शीघ्र नष्ट हो जाती है उसी प्रकार अशिक्षित राजा का कुल भी स्वतः नष्ट हो जाता है।

कौटिल्य के अनुसार राजा के दो प्रमुख कर्तव्य होते हैं। प्रथम, उसे प्रजाजनों के हित और सुख पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। द्वितीय, अन्य राजाओं पर भी तीक्ष्ण नजर रखना चाहिए। जिससे उनका अपने राज्य पर कोई बाहरी खतरा उपस्थित न हो। इस प्रकार कौटिल्य द्वारा निर्दिष्ट राज्य के सप्तांगों में राजा का सर्वोच्च स्थान है।

Scanned by CamScanner

(Page-02)

② **अमात्य :—** राज्य का दूसरा आवश्यक तत्व अमात्य होता है। अमात्य के अन्तर्गत सिर्फ मंत्री ही नहीं, अपितु सब प्रकार के शासनाधिकारी, शासन विभाग के अध्यक्ष एवं राज्य के अन्य कर्मचारी होते हैं। कौटिल्य के अनुसार राजा मंत्रियों एवं कर्मचारियों के बिना सुचारु रूप से शासन का संचालन नहीं कर सकता है। जिस प्रकार रथ एक पहिए पर नहीं चल सकता, उसी प्रकार सिर्फ राजा से राज्य नहीं चल सकता है। अतएव राजा को अपनी सहायता के लिए अमात्यों की आवश्यकता होती है। उन्होंने यह भी कहा है कि ऐसे व्यक्तियों को ही अमात्य बनाना चाहिए जो सामर्थ्यवान, बुद्धिमान एवं गुणवान हों। उन अमात्यों में से श्रेष्ठ, विश्वासपात्र तथा अनुभवी व्यक्तियों को मंत्री बनाना चाहिए।

उनके अनुसार राज्य के आकार एवं सामर्थ्य के अनुसार ही मंत्रियों की संख्या होनी चाहिए। परन्तु उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि राजा को तीन या चार मंत्रियों से परामर्श लेना चाहिए, उससे अधिक और कम से नहीं। अमात्यों के कार्य राजा को परामर्श देना, कृषि-क्षेत्र निर्माण कार्यों का सूचारु रूप से संचालन करना, राज्य की रक्षा के लिए उपाय सोचना, नए स्थानों में गाँव बसाना एवं उनका विकास करना, और अर्थदंड तथा राजकीय कर की वसूली करना है।

③ **जनपद :—** राज्य का तीसरा अंग जनपद है। यद्यपि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र में स्पष्ट रूप से कहीं भी जनपद की परिभाषा नहीं दी है तथापि जनपद से उनका अर्थ केवल भू-प्रदेश से ही नहीं, बल्कि राज्य के निवासी या जनसंख्या से भी है। जनपद के अभाव में राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

उनके अनुसार राजा को चाहिए कि दूसरे देश के मनुष्यों को बुलाकर अथवा अपने देश की जनसंख्या में वृद्धि कर वह पुराने या नए जनपद को बसाए। प्रत्येक जनपद में कम से कम सौ घर और अधिक से अधिक

Scanned by CamScanner

पाँच सौ घर वाले ऐसे जनपद बसाने चाहिए जिसमें प्रायः शूद्र तथा किसान अधिक हों। एक गाँव दूसरे गाँव से कोस भर या दो कोस की दूरी से अधिक न हो ताकि अवसर आने पर एक दूसरे की सहायता प्रदान कर सकें। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद स्थानीय, द्रोणमुख, खार्वटिक, संग्रहण और गाँव में बँटा हुआ रहना चाहिए। अर्थशास्त्र में भूप्रदेश के बारे में ऐसा संकेत मिलता है कि कौटिल्य राज्य के छोटे आकार में आस्था प्रकट करता है।

उनके अनुसार जनपद एक ऐसा प्रदेश हो जहाँ कि जलवायु अच्छी हो, भूमि उपजाऊ हो तथा उसमें खेती योग्य भूमि के अतिरिक्त जंगल भी हो। उसकी सीमाएँ सुरक्षित हों। जनपद में नदियाँ, पशुधन, खनिज पदार्थ आदि की बहुलता हो।

इसके अलावा जनपद में केवल प्रदेश का वर्णन ही नहीं आता। इसमें प्रदेश एवं निवासी दोनों ही सम्मिलित हैं। निवासियों के विषय में उनका मत है कि वे परिश्रमी होने चाहिए तथा प्रसन्नता पूर्वक कर देना चाहिए। क्रमशः.........